हिन्दी-विभाग

डॉ० कविता कुमारी सिंह

B.A. I (Hon's)

विषय- भक्तिकाल को हिन्दी-साहित्य का स्वर्णयुग कहना कहाँ तक समीचीन है:—

यह निर्विवाद सत्य है कि भक्तिकाल हिन्दी-साहित्य में एक जगमगाता हुआ स्वर्णकाल है। इस युग में अनेक भक्त कवियों की वाणी तथा साहित्य की सरिता अबाध्य रूप में बही है।

डॉ० श्यामसुन्दरदास के शब्दों में "जिस युग में कबीर, जायसी, तुलसी, सूर जैसे सुप्रसिद्ध कवियों और महात्माओं की दिव्य वाणी उनके अन्तःकरण से निकलकर देश के कोने-कोने में फैली थी, उसे साहित्य में सामान्यतः भक्तियुग कहते हैं। निश्चय ही यह हिन्दी-साहित्य का स्वर्ण-युग है।"

साहित्य को हम निश्चित परिधि में नहीं बांध सकते। साहित्य अबाध्य रूप से के हृदय में फूटता है और जन-जन में

प्रेरणा देता हुआ हृदय की गहराइयों में उतर जाता है। साहित्य जातीयता, राष्ट्रीयता तथा एकदेशीयता से दूर रहकर अपना संदेश सर्वत्र फैलाता है। वह किसी एक ही वाद की झोंकी में बंधा कर नहीं चलता, बल्कि जीवन के प्रत्येक स्थल का स्पर्श करते हुए सम्पूर्ण जीवन को पाठक के सम्मुख प्रस्तुत करता है। यह उस सुगंधित वाटिका के समान है, जिसका स्पर्श करके वायु सर्वत्र सुगंधित बिखेरता है। इसका अर्थ

यह नहीं है कि साहित्य में विश्वचेतना ही रहती है, अपितु सार्वभौमिकता के साथ अपने देश की ~~भावनाएँ~~ भावनाओं से भी पूरित रहता है। साहित्य में देश, काल तथा परिस्थिति का प्रतिबिम्ब होता है। जनता की भावनाएँ साहित्य में लक्षित होता है। सत्यं, शिवं और सुन्दरं की सुन्दर त्रिवेणी कलकल नाद करती हुई साहित्य में बहती है।

स्वर्ण-युग साहित्य अपने पूर्व तथा

3 शनिवार

बाद के साहित्य से भी बढ़कर होता है। हिन्दी साहित्य के चारों कालों में दृष्टिपात करने से भक्तिकाल की विशिष्टता ज्ञात हो जाती है। साहित्य के आदिकाल का प्रारम्भ युद्धों में भयानक नाद तथा तलवारों की झनझनाहटों के मध्य में हुआ था। उस समय के साहित्य वीर और शृंगार – दो ही रसों की धारा बही। जीवन में अन्य भावनाओं को उसमें स्थान नहीं मिलता था।

वीरगाथा काल के पश्चात भक्तिकाल

4 रविवार

का पदार्पण होता है। वीरता के स्थान पर सूर और तुलसी आदि की भावमयी एवं भक्तिमयी भावनाएँ उमड़ चलीं। इस काल में बड़ा ही महत्वपूर्ण साहित्य रचा गया।

भक्तिकाल के शांत एवं वैराग्यपूर्ण वातावरण के पश्चात् हिन्दी-साहित्य में कविताकामिनी सुरा की मादकता में झूमती हुई अपने अल्हड़ यौवन के साथ आई। मुक्ति के स्थान पर रति की ही प्रशंसा होने लगी।

राधा और कृष्ण आराध्य न होकर साधारण से नायक-नायिका बनकर रह गये। कविता में ऊपरी तड़क-भड़क तो पायी जाती है, किन्तु अन्तःस्वरूप लुप्त हो गया। सुरा और सुन्दरी ये दो ही कविता के आभूषण थे। हाँ, महाकवि भूषण आदि कुछ वीररस के कवियों की कविताएँ अवश्य ही इससे भिन्न कोटि की थीं।

गद्य के विस्तृत रूप, विश्वजनीन भावनाओं तथा अपनी अभिव्यक्ति के अनेकरूपता के कारण यह आधुनिक काल स्वर्णयुग कहलाने योग्य क्षमता रखता है। किन्तु भक्तिकाल की अपनी कुछ और ही विशिष्टताएँ हैं जिनके फलस्वरूप वह तीनों कालों की तुलना में प्रमुख ठहरता है। आज की कविताओं में अनुभूति की तीव्रता नहीं है। महादेवी, बच्चन, पंत, प्रसाद, निराला आदि के उच्चकोटि के साहित्यिक गीत होने पर भी उतने लोकप्रिय न हो पाये, जितने कि मीरा, सूर, तुल के गीत जन-जन की जिह्वा पर आये। तुलसी और सूर ने उस साहित्य का सृजन किया, जो धनियों की अट्टालिकाओं में नृत्य करता है तथा निर्धनों की झोप को आलोकित करता है। आधुनिक साहित्य हमारे हृद और मन को संतुष्ट करता है, परन्तु आत्मा की प्यास न बुझा पाता। भक्तिकाल की रचनाओं में तीनों ही विशेषताएं हैं